राग - रागेश्री

थाट - खमाज
समय - रात्रि का द्वितीय प्रहर
वादी - ग
संवादी - नी
जाति - ओडव / षाडव
वर्ज्य - आरोह में रे, प
अवरोह - में प

आरोह - सा ग म ध नी सां
अवरोह - सां नी ध म, ग म ध ग म रे सा।
पकड़ - ध ग म रे नि सा।
ध ग म ध नी ध, म ग म रे सा

सरगम - गीत

ताल - झपताल

		स्थाई		
स्थाई	ग म	रे - सा	ध नी	सा ग म
	ग म	ध - ध	नी नी	ध - म
	ग म	ध नी सां	नी सां	नी ध म
	x	2	0	3
		अंतरा		
	ग म	ध नी सां	नी सां	रें रें सां
	नी सां	गं - मं	रें सां	ध नी ध
	म ध	नी ध म	ग म	रे - सा
	x	2	0	3

स्वर - विस्तार

(1) सा ऽऽ नी ऽऽ ध ऽऽ, ध ऽऽ, नि ऽऽऽ, ध ऽऽ सा ऽऽ रे नी ध
सा ऽऽऽ सा ऽऽऽ नि ध ऽऽ ध नि ध सा ऽऽऽ रे नि सा

(2) सा ऽऽ ऽ रे नि सा ऽऽ नि, ध ऽऽ ध नि सा रे नि सा ऽऽ नि ध
म ध नि ऽऽ ध सा ऽऽ रे नि ऽऽ सा म ध नि सा ध नी सा रे सा नि ध सा

राग - रागेश्री

शास्त्रीय - जानकारी -

इस राग की जाति ओडव - षाडव मानी जाती है। आरोह में वैसे तो रिषभ - पंचम वर्जित करते है। फिर भी रेगमगरेसा इस प्रकार आरोह में रिषभ प्रयुक्त होता है, जिससे जाति षाडव भी कही जा सकती है। सरल रूप से आरोह में रिषभ नही लिया जाता, इसी कारण ओडव - षाडव ही मानना योग्य है वादी संवादी के बारे में मतभेद हो सकता है। रात्रि के द्वितीय प्रहर में यह राग सर्वसंमत से गाया जाता है। पूर्वांगप्रधान राग है इसलिये गंधार वादी रखना उचित है। लेकिन धैवत भी प्रबल है अत: कुछ विद्वान धवादी संवादी ग मानते है। केवल कोमल निषाद के प्रयोग से राग की शोभा और स्वरूप स्पष्ट रहता है। शुद्ध निषाद का प्रयोग करने से किंचित रागरस की हानि प्रगट होती है। और कर्णमधुर भी नही लगता इसी कारण कोमल निषाद से ही यह गाना चाहिये। स्पष्ट रूप से खमाज थाट का राग है। यह राग बागेश्री से मिलता - जुलता है ऐसा कहा जाता है। नाम में साम्यता होने के कारण ऐसा कहा जाता होगा। आलाप करते समय संपूर्ण गंभीर स्वरूप प्रगट करता है। तानें लेने से राग का स्वरूप चंचल हो जाता है। यह राग आलाप अंग में अधिक स्पष्ट होता है।

तीनो सप्तक में गाया जाता है। यह एक प्राचीन राग है।

स्वर - विस्तार - (3) म ऽऽ ग मरेसा नि़सागऽऽ साऽरेऽऽसा धनि़सागऽऽ मऽऽ मऽऽ गऽऽ रेगमग रेऽऽसाऽऽ रेनि़साधनि़ सागऽऽ मऽऽ सारेऽऽ नि़सऽऽ धनि़सा ग, मगरेसा नि़सारेरे सानीधनी सागऽऽ मऽऽ मऽऽगऽऽ गऽऽमऽऽ रेरेसानि़साधनि़ सागमरेसा

रागेश्री

स्थाई - बन - बन बोलत कोयलियाँ
आई बसंत बहारीयाँ
फूली चमेली बेलरीयाँ
बन बन बोलत कोयलियाँ

ताल - त्रिताल

			म ब
रे सा ध़ नी न ब - न	सा - ग म बो - ल त	- म ध नी - को य लि	ध म ग म यां - - आ
रे सा - नी - ई - ब	सा - - सा सं - - त	नीसा रेसा ध़ नी ब - - हा री	सा - ग म यां - - फू
म ध - म - ली - च	ध़नी सां - सां मे - - - ली	सां - ध नी बे - ल री	ध म ग म यां - - ब
रे सा ध़ नी न ब - न	सा - ग म बो - ल त	- म ध नी - को य लि	ध म ग म यां - - उ
3	x	2	0

रागेश्री

अंतरा

उमड़े नये नये पातवा
हाँ रे हाँ रे, मोहत मनवा
नाचत मुरवा सुंदरवा

ताल - त्रिताल

अंतरा

म ध - म	ध्नी सां - नी	सां सां नी सां	नी ध म ध
म ड़े - न	ये - - - न	ये पा - त	वाँ - - हाँ
नी सां - मं	गं - - -	मी मां ध नी	ध - - नी
रे हाँ - रे	मो - - -	ह त म न	वा - - ना
ध म - म	ग ग म -	ध्नी सां ध्नी	ध म ग म
- च - त	मुं र वा -	सुं - - द र	वा - - व
3	x	2	0

बंदिश

राग - रागेश्री ताल - रूपक

स्थाई - काहे फोरी गगरी मोरी, नंदकुंवर बडो अनाडी।

अंतरा - कासे कहुँ अब कासे सुनाऊँ. हाय न जानूँ अब कहाँ जाऊँ।

स्थाई	सां - नी	ध -	म म	ग ग म	रे -	नि़ सा
	का - हे	फो -	री -	ग ग री	मो -	री -
	सा - सारे	नि़ सा	ध़ नि़	सा ग म	मध नीसां	धनी सां
	नं - द	कुं -	व र	बडो अ	ना -	डी -
	x	2	3	x	2	3
अंतरा -	म - म	ध ध	नी ध	सां सां सां	नी ध	सां -
	का - से	कहुँ	अब	कैसे सु	ना -	ऊँ -
	गं - गं गंमं	रें -	सां -	गम ग म	रे -	नि़ सा
	हा - य न -	जा -				
	हा - य न -	जा -	सुं -	अब कहाँ	जा -	ऊँ -
	x	2	3	x	2	3
	तीं ती ना	धीं ना	धीं ना			